NEHRU
BAL PUSTAKALAYA

रूपा हाथी

मिकी पटेल

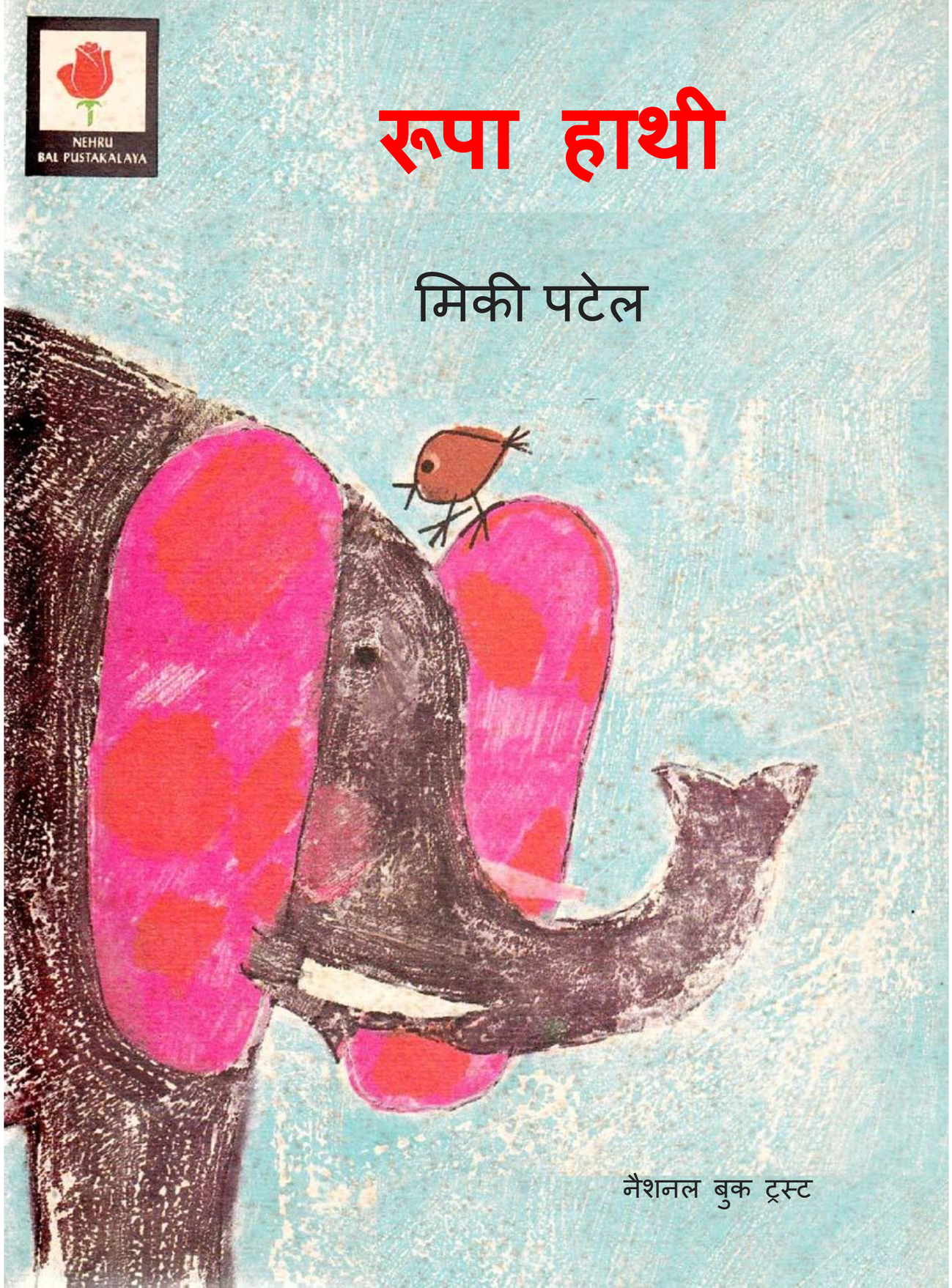

नैशनल बुक ट्रस्ट

रूपा हाथी

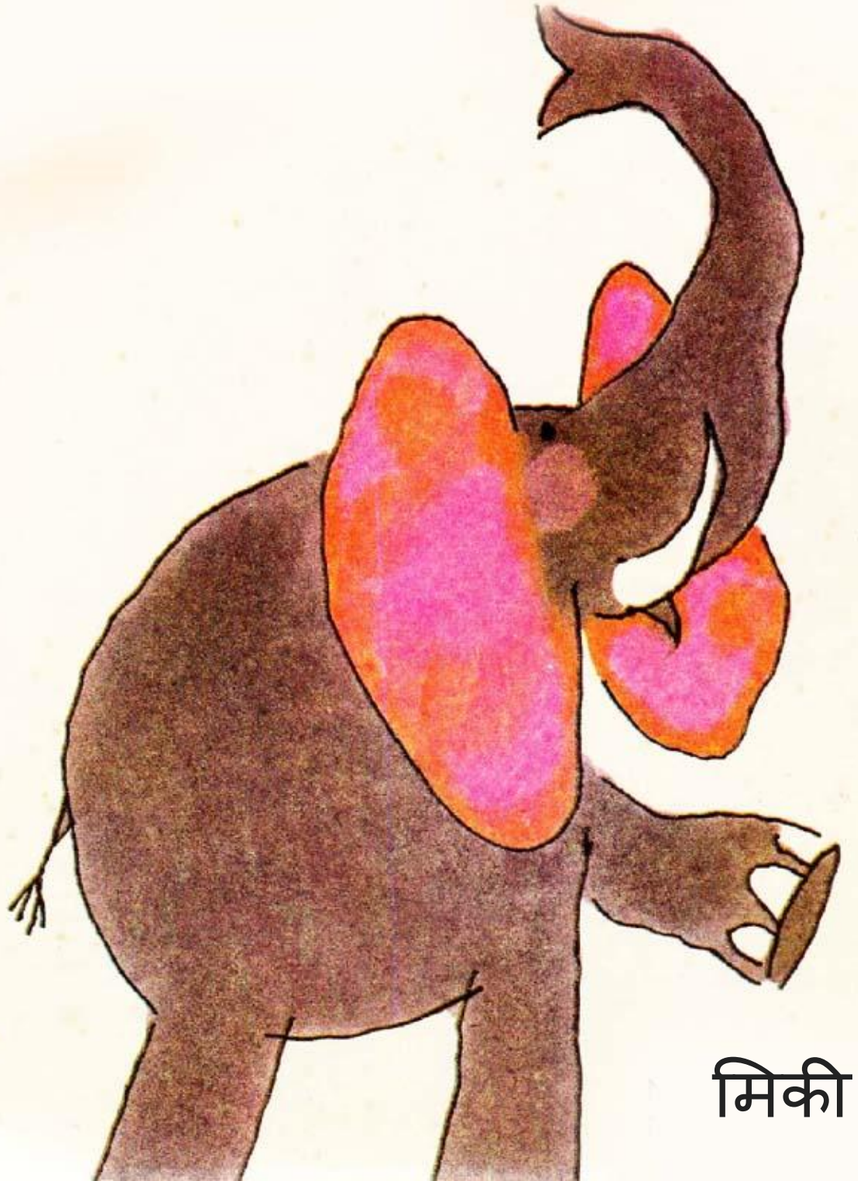

मिकी पटेल

नन्ही चिड़िया चिंची चिड़ियाघर के सारे जानवरों को जानती थी.

उसका सबसे अच्छा दोस्त था रूपा हाथी.

वह हर रविवार को सवेरे-सवेरे बच्चों को अपनी पीठ पर बिठाकर घुमाया करता था.

कभी-कभी चिंची रूपा के कान पर जा बैठती और बच्चों के साथ-साथ जानवरों को देखने जाती.

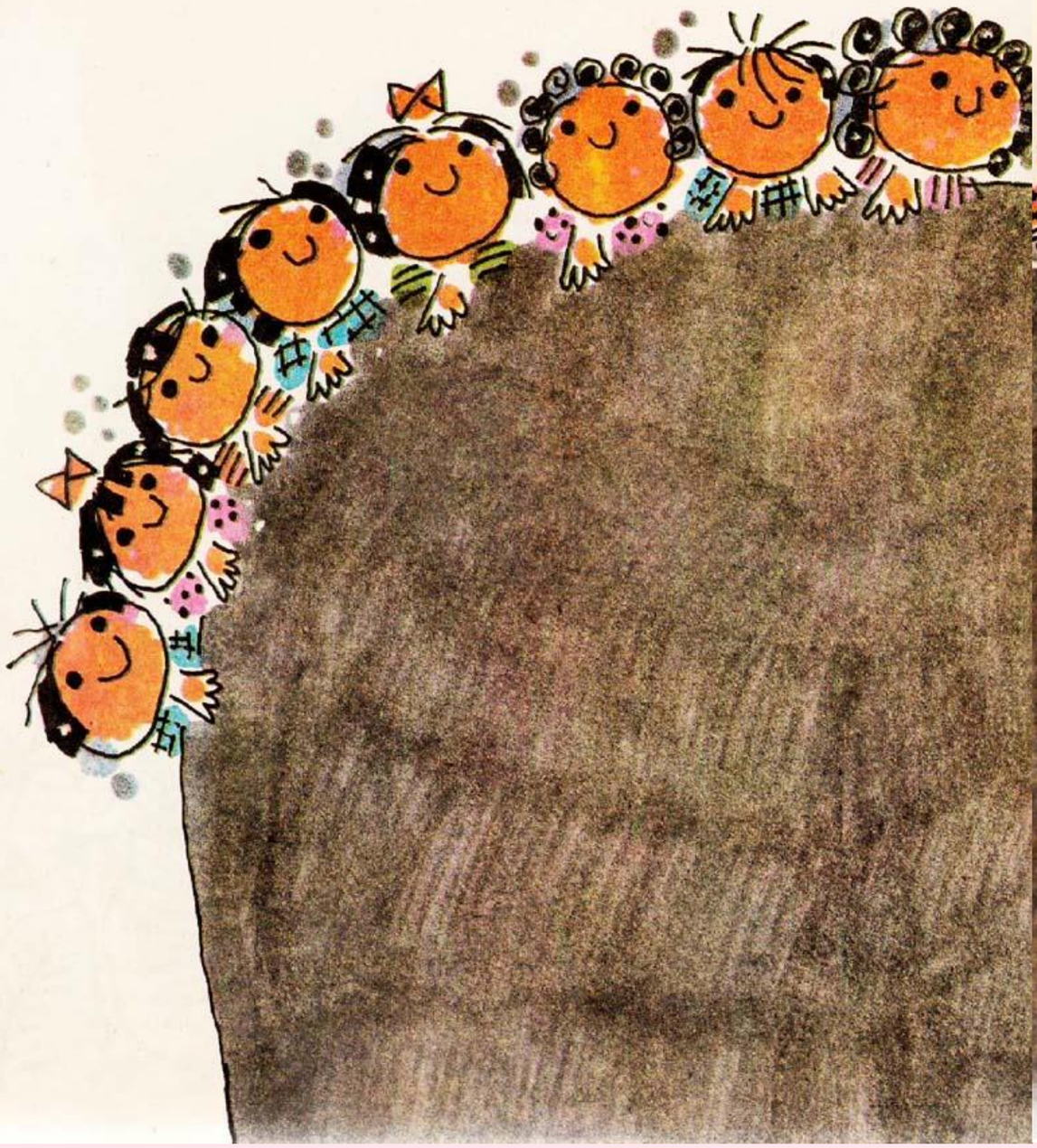

लेकिन आज चिंची ने देखा कि रूपा हाथी
फूट-फूट कर रो रहा था.

वह एक कोने में खड़ा था और उसके गालों से
आंसू बह-बहकर घास पर गिर रहे थे.

"क्या बात है रूपा?" चिंची ने चहक कर पूछा.

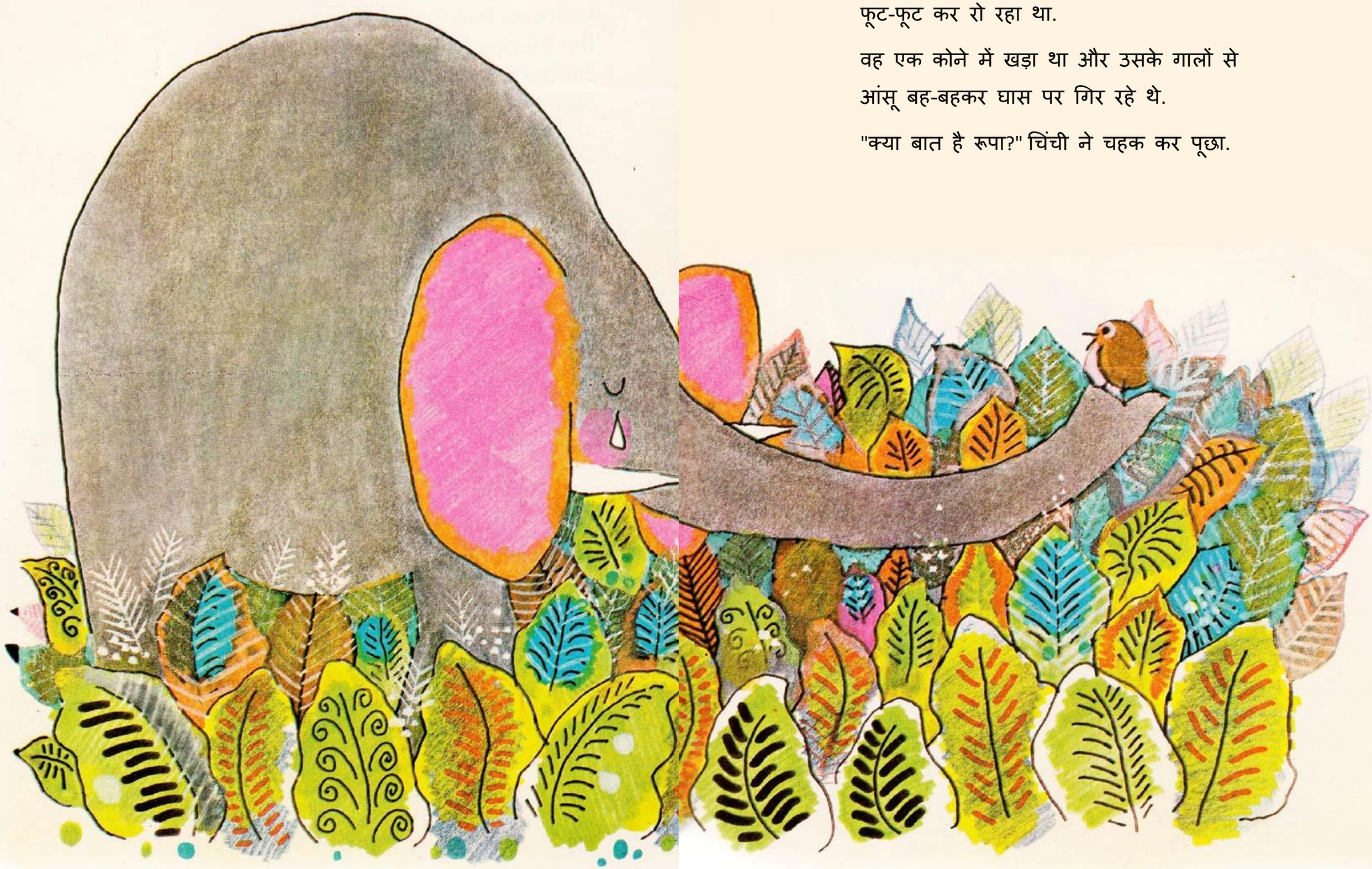

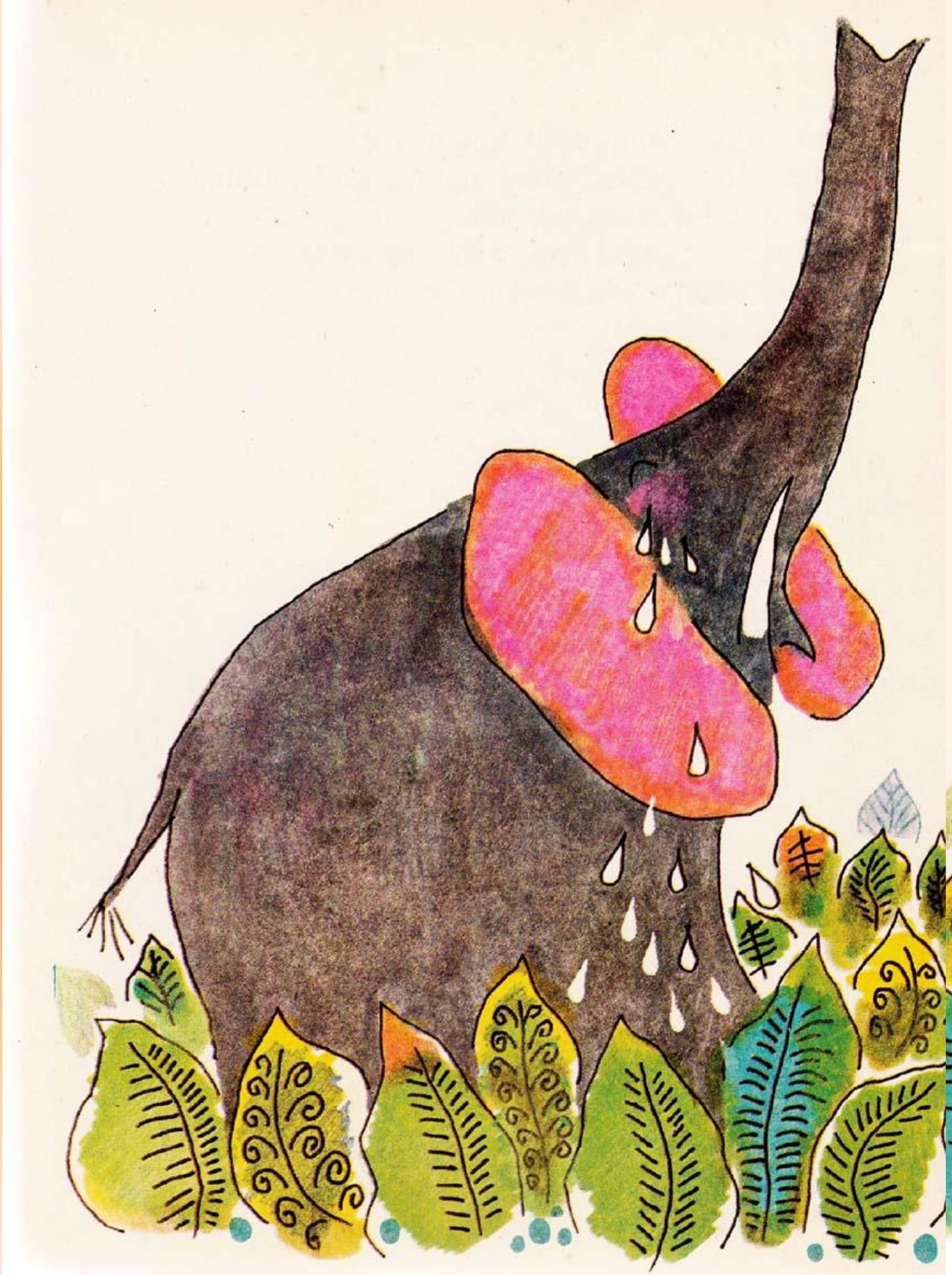

"मैं कितना बदसूरत हूँ. मैं तो बस एक मोटा-सा, भूरा-सा, टब जैसा हूँ. ऊँ ... ऊँ ...ऊँ ..." रूपा ने सिसकी भरकर कहा.

"रूपा, रोओ मत," चिंची ने कहा. "मैं जल्दी ही तुम्हें उजला और सुन्दर बनाने की कोई तरकीब सोचती हूँ."

यह कहकर चिंची उड़ गई.

चिंची गई शेर के पास.

"नमस्ते तनू शेर! रूपा आज बहुत उदास है. अपनी यह सुन्दर चमकीली धारियां थोड़ी देर के लिए उसको दे दो न," उसने चहक कर कहा.

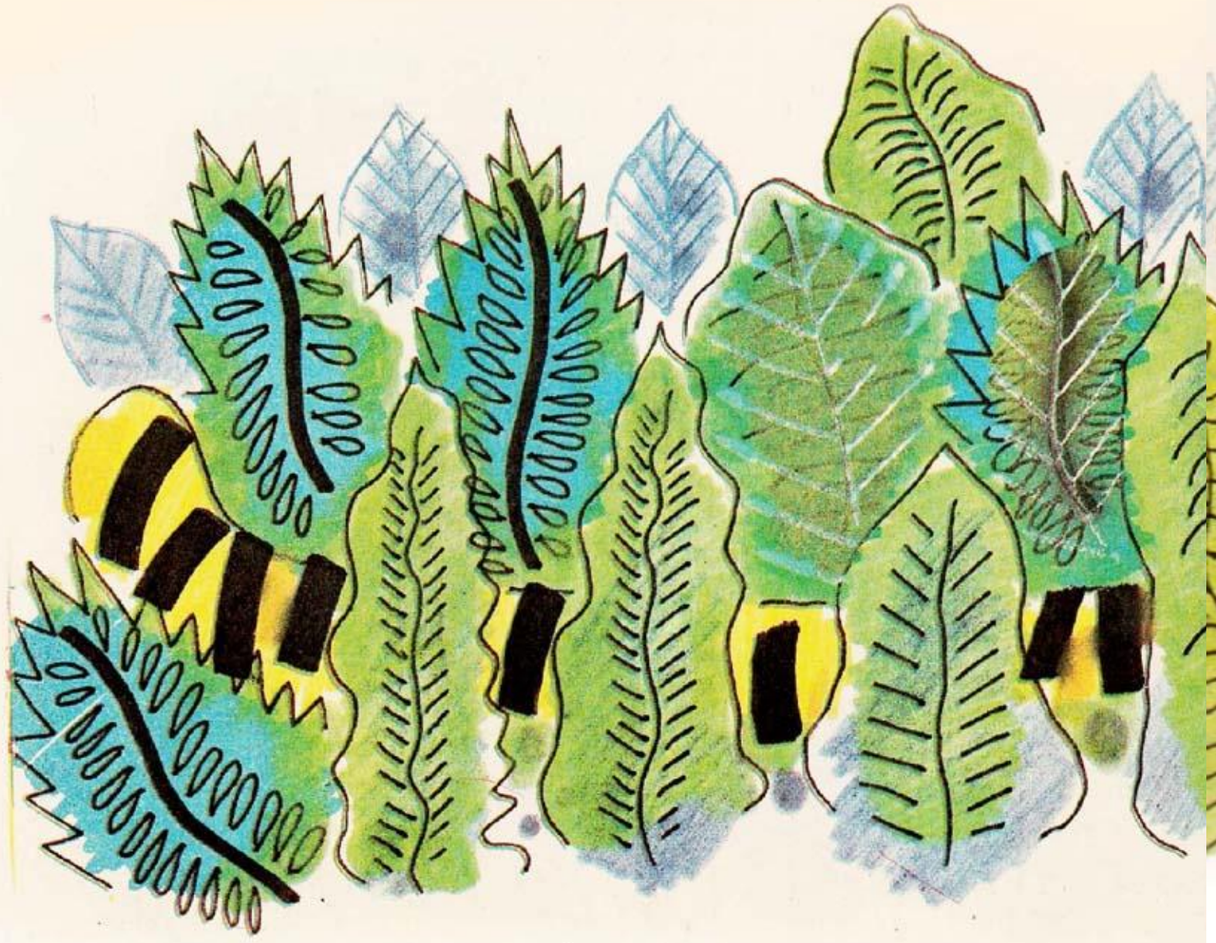

फिर वह उड़ गई सोनू तेंदुए के पास आई.

"क्या तुम अपने चमकीले, रंगीन बूटे रूपा को दोगे?" रूपा ने पूछा.

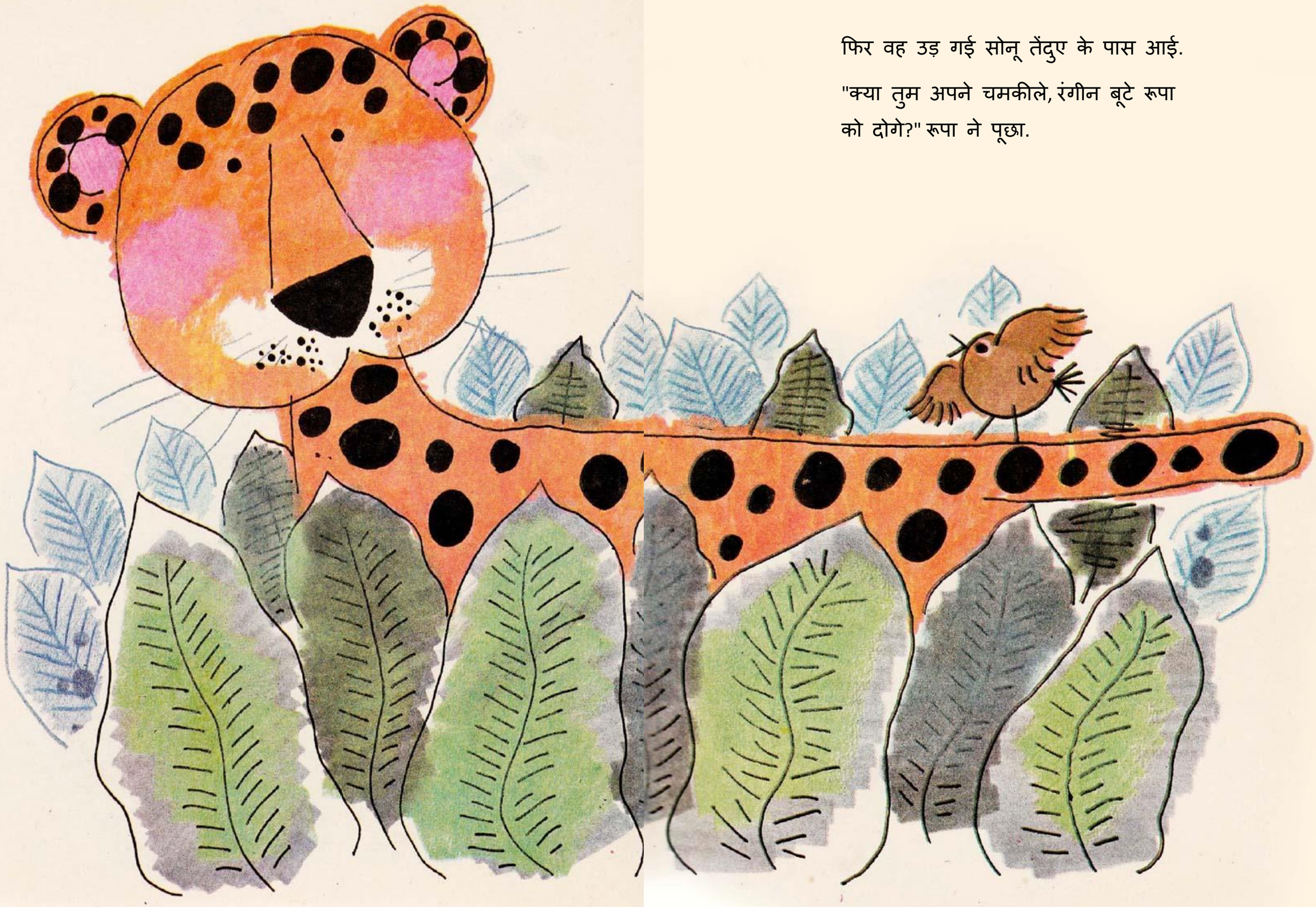

फिर चिंची ने राजा मोर और मिट्ठू तोते से पूछा,

"तुम अपने सुन्दर रंग रूपा को दोगे?"

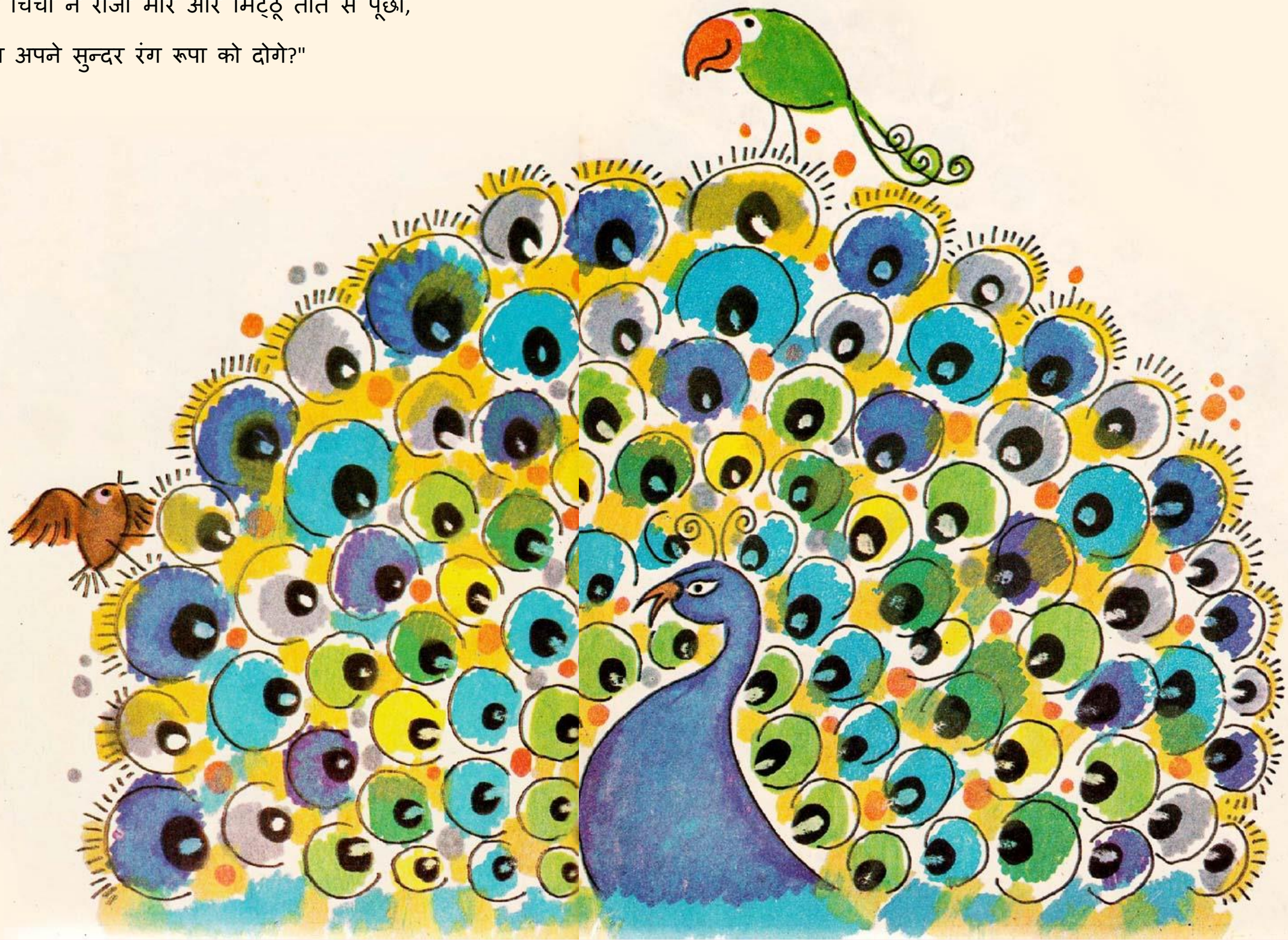

तनू, सोनू, राजा और मिट्ठू सब बाग़ में रूपा के पास गए.

रूपा हाथी अभी कोने में खड़ा सिसकियाँ भर रहा था.

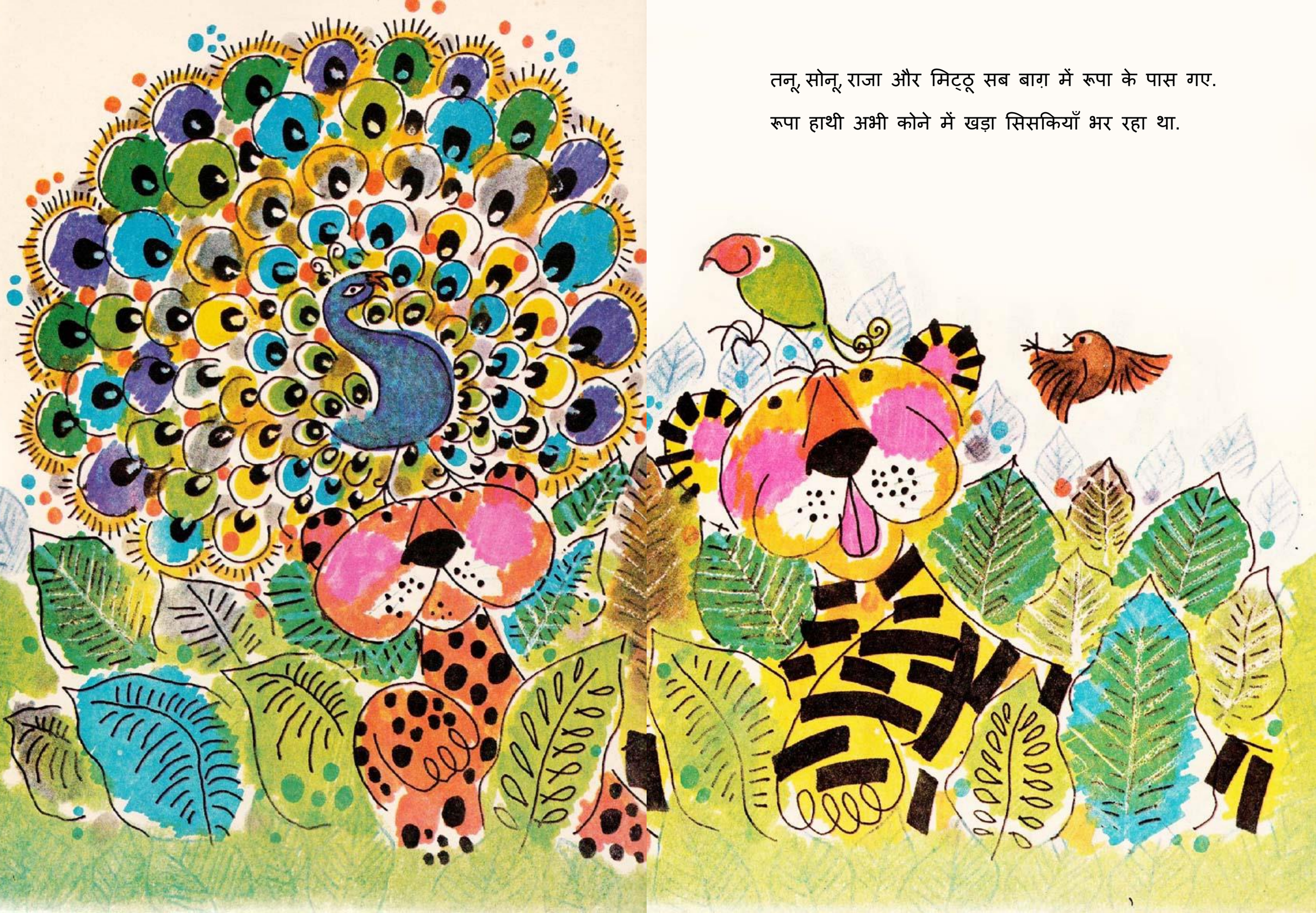

वे सब अपना-अपना रंग रूपा को दे रहे थे.

रूपा की सारी पीठ पर काली-पीली धारियां पड़ गईं.

सोनू ने अपने सारे बूटे रूपा की टांगों पर छाप दिए.

मिट्ठू ने उसकी पूंछ पर चमकीली हरी धारियां डाल दीं

और राजू ने उसकी सूंड पर नीले और बैगनी धब्बे छोड़ दिए.

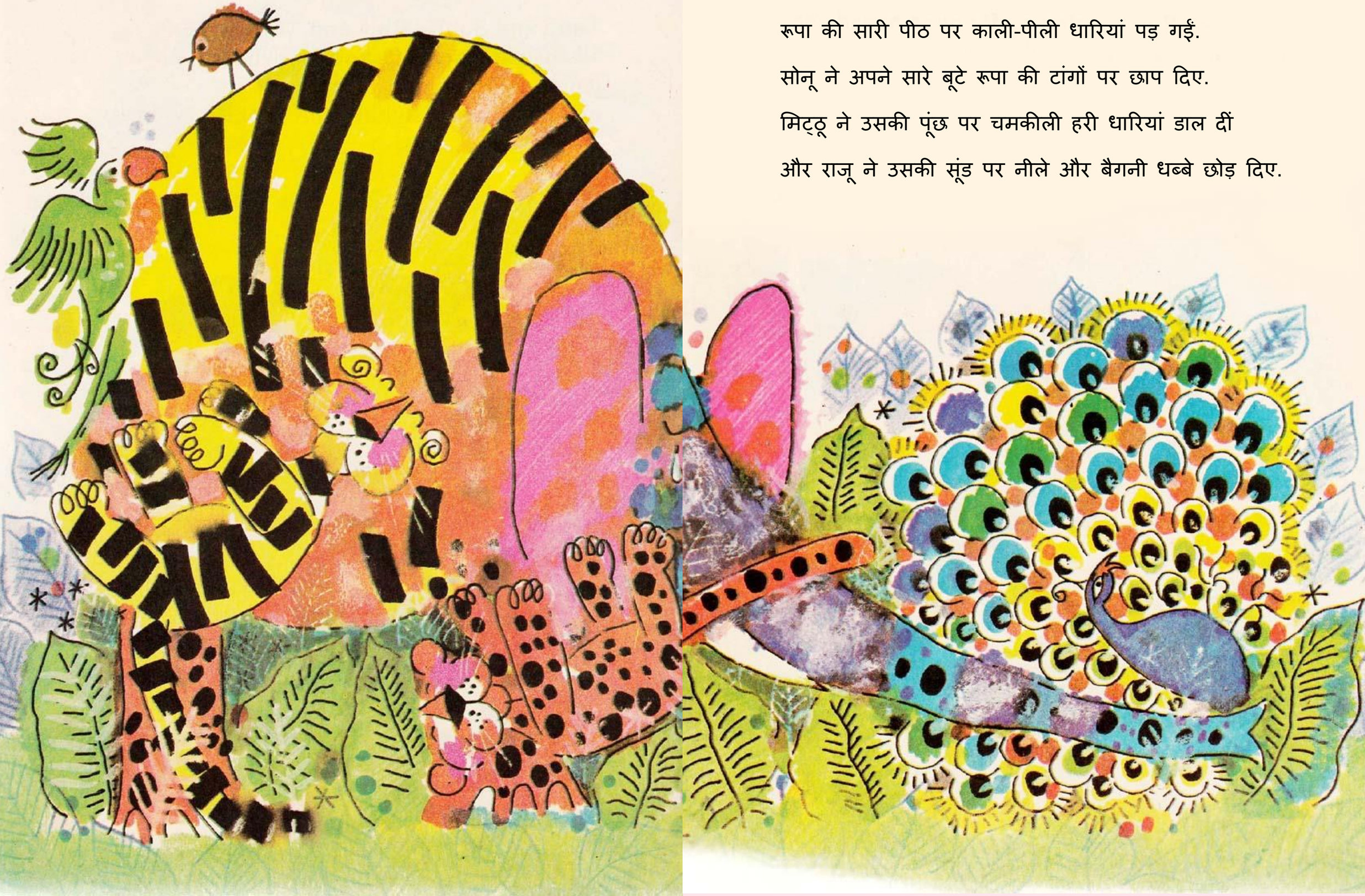

रूपा ने रोना बंद कर दिया.

उसने चारों तरफ नज़र घुमाकर अपने आपको देखा.

वह बहुत खुश था.

उसे अपने आप पर बड़ा घमंड हो रहा था.

"मैं तो इतना सुन्दर लग रहा हूँ, जैसे शादी का शामियाना."

उसने सोचा, "अब बच्चे मुझको खूब प्यार करेंगे."

दूसरे दिन बच्चे हाथी की सवारी के लिए आए.

एक बच्चे ने कहा, "हे, हे भगवान यह क्या हो गया है?

हमारा प्यारा भूरा हाथी रूपा कहाँ चला गया?

यह धारीवाला, धब्बेवाला बदसूरत दानव कहाँ से आ गया?"

कुछ नन्हें बच्चे तो डर गए.

हूं.... हूं.... हूं.... वे रोने लगे.

"भाग जाओ, बदसूरत जानवर!

हमें तो अपना रूपा चाहिए," सबने कहा.

रूपा रो पड़ा.

अब वह क्या करे?

फिर उसे एक उपाय सूझा.

वो झट से पास ही कमाल की तलैया में कूद पड़ा.

सूंड में पानी भर-भर उसने हर तरफ खूब धो डाला.

सारे रंग - पीला, हरा, नीला और बैंगनी, धारियां और धब्बे सब धुल गए.

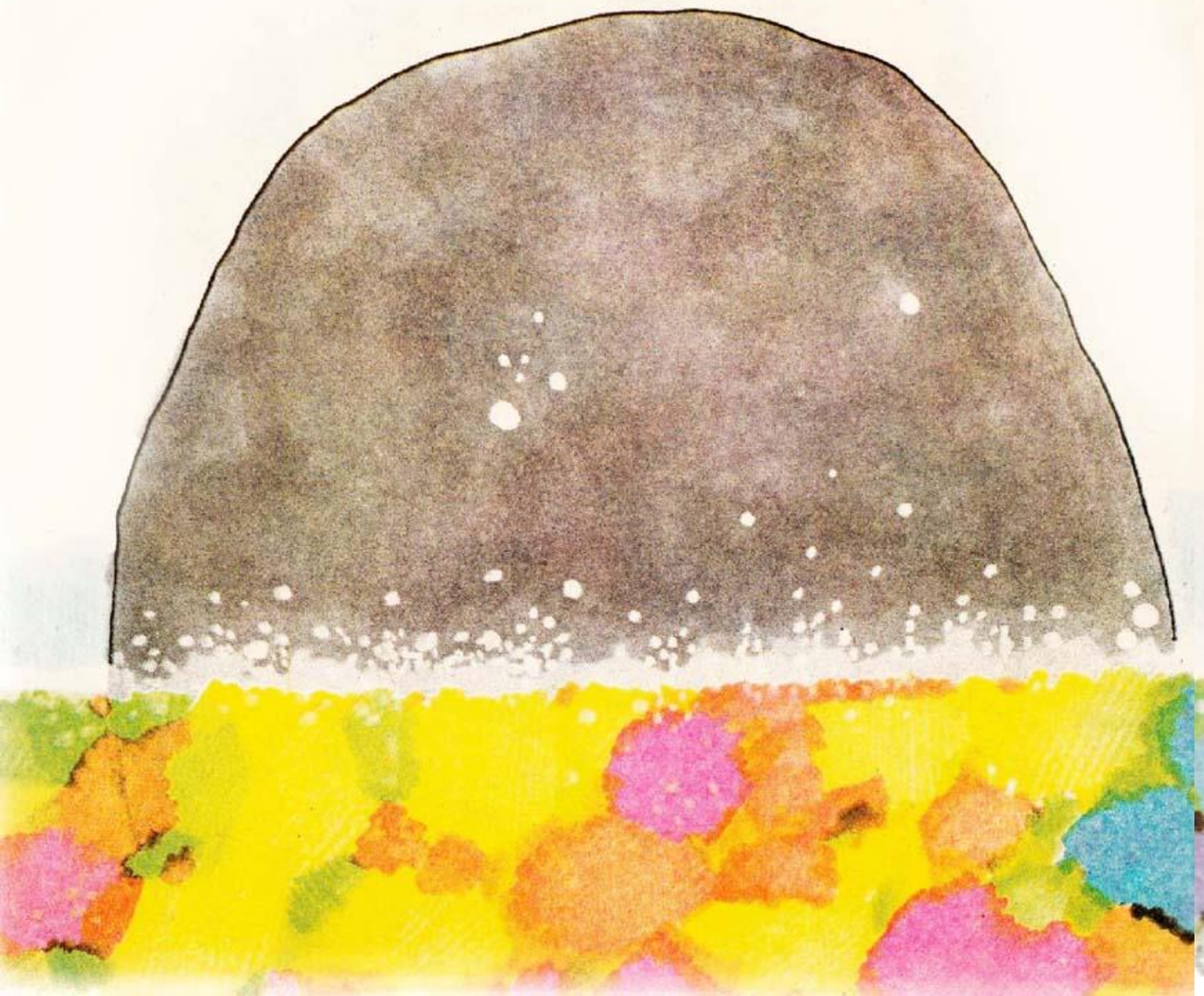

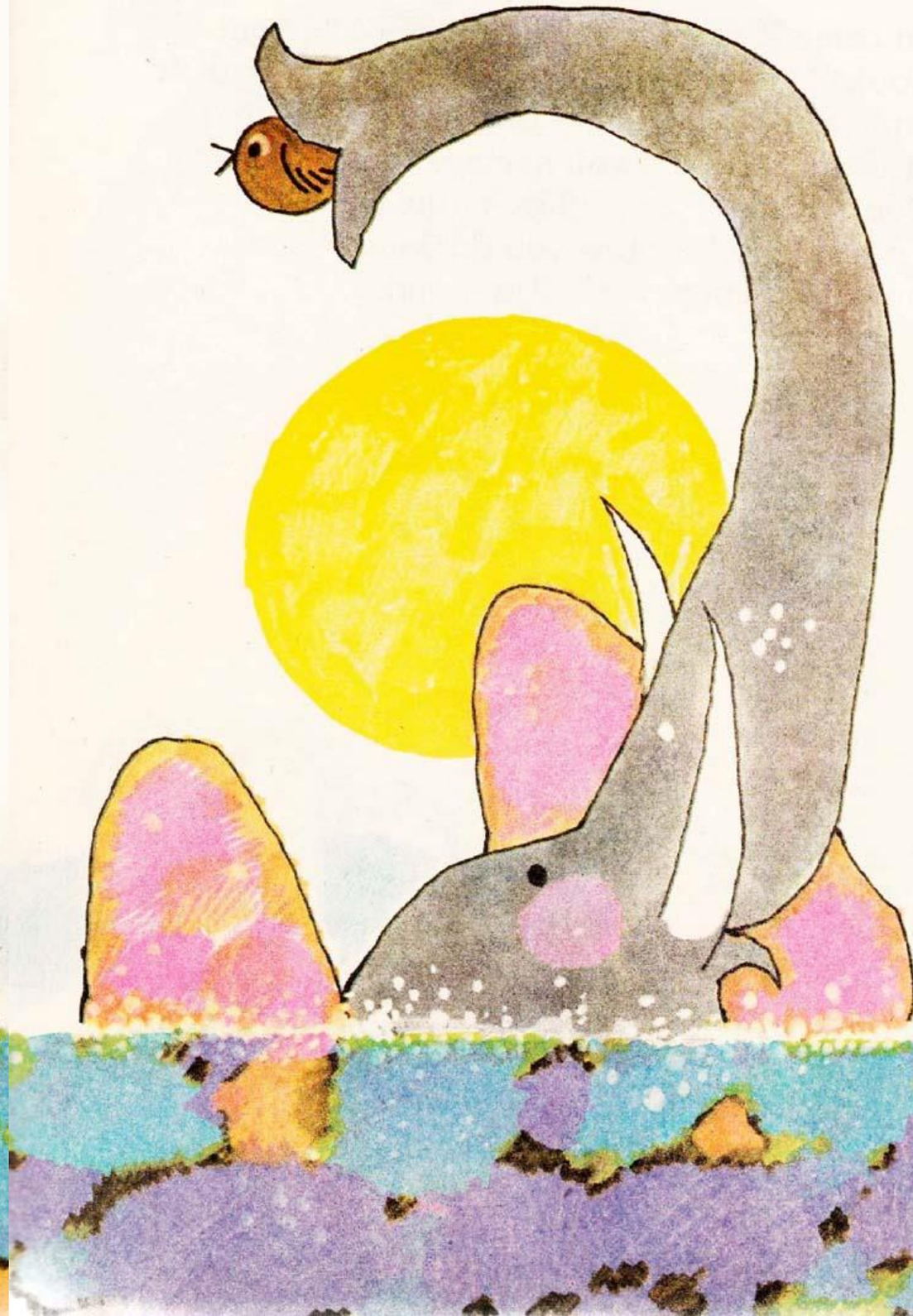

रूपा बाहर निकला, तो वो पहले जैसा था - सादा, भूरा.

"देखो, देखो," बच्चों ने ख़ुशी से बजाकर कहा, "वह रहा हमारा रूपा."

"रूपा इतने ढेर सारे रंग तुमने कहां से लगाए थे?" बच्चों ने पूछा।

"आओ, मैं तुम्हें अपने दोस्तों से मिलाता हूँ जिन्होंने मुझे वे रंग दिए थे." रूपा ने कहा.

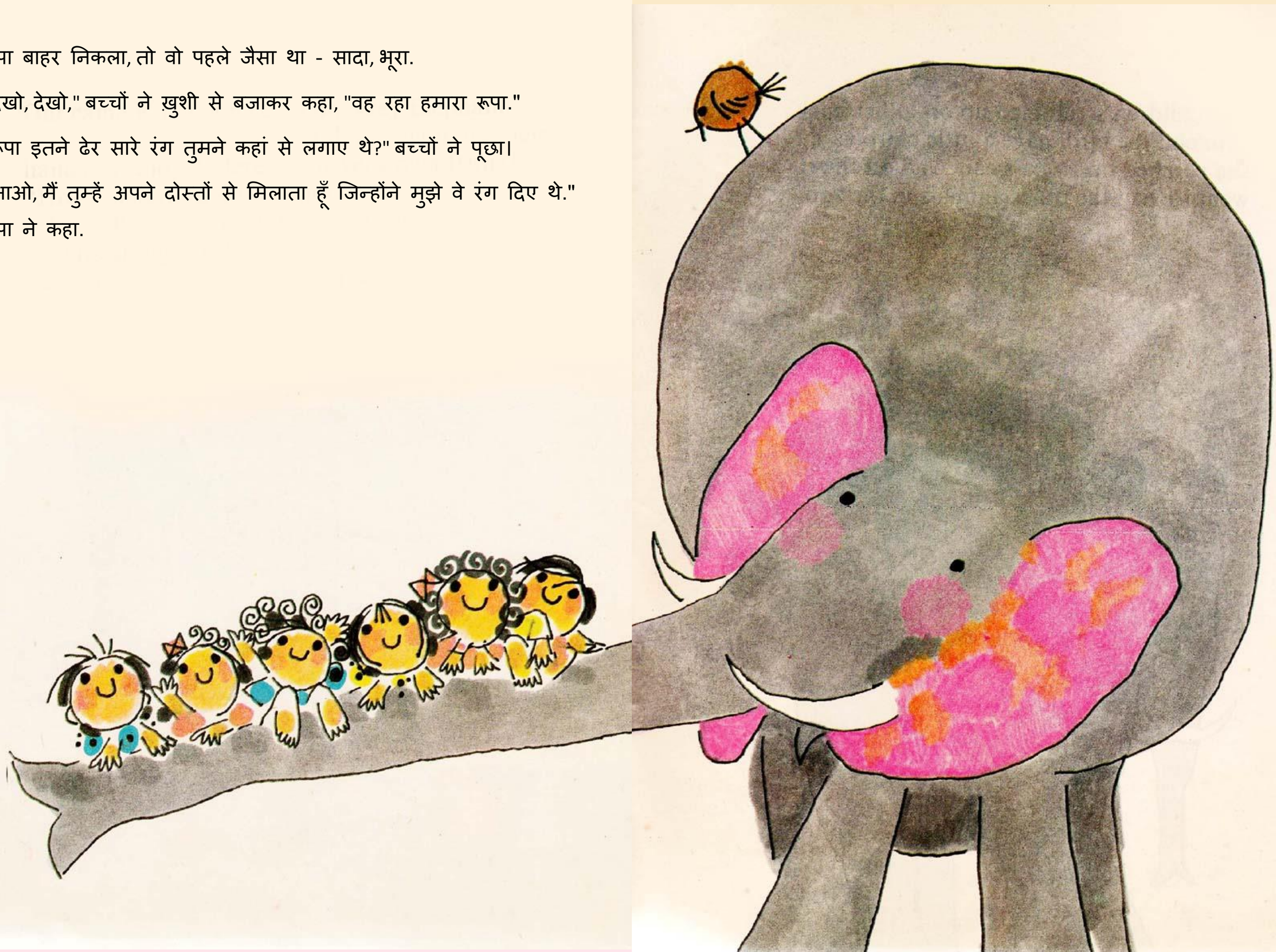

बच्चे हाथी की पीठ पर चढ़ गए.

चिंची चिड़िया चहक कर रूपा के कान पर बैठ गई.

फिर वे चले चिड़ियाघर के अन्य जानवरों से मिलने.